प्रथम अध्याय

मालती जोशी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

साठोत्तरी काल नारी उत्थान एवं जागरण का काल माना जाता है। इस काल में नारी सिर्फ घर की चार दीवारियों में कैद न रहकर जीवन के सभी क्षेत्र में प्रगति के नए-नए क्षितिजों को पार कर रही है। इसके साथ साहित्य के सभी क्षेत्रों को उसने अपनी प्रतिभा, संवेदना से समृद्ध किया है। इसी युग की महिला लेखिकाओं में 'मालती जोशी' का अपना एक अलग स्थान हैं। मालती जोशी की अधिकतर कहानियां 'पारिवारिक जीवन' पर लिखी हुई हैं। इसी कारण उनकी कहानियों में भारतीय परिवार, संस्कृति और परंपरा के दर्शन होते हैं। इनकी कहानियां परिवार से जुड़ी होने पर भी, इस क्षेत्र में उन्होंने अपनी अलग प्रतिभा का परिचय दिया है। मालती जोशी ने अपनी कहानियों के द्वारा नारी समस्याओं का चित्रण अपनी गहरी अनुभूति और नई जीवन दृष्टि के आधार पर किया है।

अतः आपकी कहानियों का अध्ययन करने से पहले आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को प्रकाशित करना हम उचित समझते हैं

1.1 जीवन रेखा में

1.1.1 जन्म एवं जन्मस्थान

समकालीन युग की सर्वाधिक लोकप्रिय लेखिका 'मालती जोशी' का जन्म 4 जून, 1934 को महाराष्ट्र के औरंगाबाद शहर में एक मध्यवर्गीय ब्राह्मण परिवार में हुआ है।

1.1.2 पिता

मालती जोशी के पिताजी कृष्णराव दिघे पुराने ग्वालियर राज्य में मॉजिस्ट्रेट के पद पर कार्यरत थे। उन्हें

सिविल जज भी कहते थे। वे एक ईमानदार अफसर थे। उनके पिता साहित्य प्रेमी थे। उन्होने लगभग चार-पांच कहानियां भी लिखी थी, इस तरह उनके घर में पढ़ने-लिखने का परंपरा से वातावरण था, इसी कारण मालती जोशी में भी लिखने के बीज अंकुरित हुए हैं। उनके पिता मॉजिस्ट्रेट होने के कारण उनका जीवन सरकारी ठाठ-बांट तथा शहरी वातावरण में रहते हुए गुजरा है।

1.1.3 माता

मालती जोशी की माता 'सरलादेवी कृष्णराव दिघे' एक आदर्श गृहिणी थी। वे घर-परिवार और बच्चों की अच्छी परवरिश के प्रती सजग थी।

1.1.4 बचपन

मालती जोशी एक मध्यवर्गीय परिवार में पली-बढ़ी है। उनके पिताजी सरकारी नौकरी में होने के कारण उनके निरंतर स्थानांतर से मालती जोशी की पढ़ाई में अनेक बाधाएं आई, फिर भी उन्होने अपनी पढ़ाई पूरी की। पिता का छोटे-छोटे गांवो में स्थानांतर होता रहता था, इसलिए पढ़ाई भी बेतरतीब रही सात भाई-बहनों का स्नेह और प्यार उन्हें मिला पिताजी जज होने के कारण उनका परिवार खुशहाल था पर रईस नहीं था। अपने बचपन के बार में मालती जोशी कहती हैं, ''उन दिनों जीवन बहुत सामान्य था, आवश्यकताएं थोडी थी इसलिए बिना किसी 'frustration' के बचपन गुजर गया।''[1]

1.1.5 भाई-बहन

मालती जोशी के चार भाई और तीन बहनें थी। उनका एक भाई लंदन में है, शेष तीन भाई और एक बहन इंदौर में हैं। उनकी एक बहन गुजर गई है।

1.1.6 शिक्षा

पिताजी के निरंतर स्थानांतर से मालती जोशी की पढ़ाई में अनेक बाधाएं आई। बचपन में घर में पढ़ाई की, फिर पांचवी कक्षा से स्कूल में गई। आठवीं (मिडील स्कूल) की परीक्षा प्रायव्हेट रूप में दी फिर नवीं और दसवीं कक्षा की परीक्षा स्कूल से दी। इंटर की परीक्षा भी प्रायव्हेट रूप में दी। बी. ए. और एम्. ए. की परीक्षा कालेज से दी। उन्होने एम्. ए. की परीक्षा 'हिंदी साहित्य विषय' लेकर आगरा विश्वविद्यालय से सन् 1956 में पूरी की।

1.1.7 विवाह

मालती जोशी का विवाह सन् 1959 को सुपरिटेंडेंट इंजीनियर 'श्री सोमनाथ जोशी' के साथ हुआ। सोमनाथ जोशी मध्यप्रदेश के सिंचाई विभाग से 'अधिक्षण यंत्री' पद पर सेवा रत थे। वे 'समाज सेवी' भी थे। 'शारदा विहार जन कल्याण समिति, भोपाल' की संस्थापना में सोमनाथ जोशी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। मालती जोशी ने सोमनाथ जोशी के साथ 42 वर्षों का सुखी दांपत्य जीवन जिया है। दुर्भाग्य से दो साल पहले सोमनाथ जोशी गुजर गए हैं।

1.1.8 संतान

मालती जोशी के दो पुत्र हैं। जेष्ठ पुत्र 'ऋषिकेश' ने अपने पिता से इंजीनियर के संस्कार ग्रहण किया हैं, और अब 'लार्सन एण्ड ट्रब्रो' कंपनी में 'जनरल मैनेजर' हैं। छोटा पुत्र 'सच्चिदानंद' ने अपनी माँ से साहित्य-संस्कार आत्मसाथ किए हैं, अब वह 'माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल' में रजिस्ट्रार है।

1.1.9 लेखन संस्कार

मालती जोशी को लेखन की प्रेरणा उनके घर से ही मिली है। उनके पिता साहित्य प्रेमी थे उन्होने चार-पांच कहानियां भी लिखी थी पर वह छप नहीं पायी। मालती ने अपने पिताजी की विरासत को सहेजा है। इस प्रकार अपने पिताजी के कारण उनमें लिखने के बीज अंकुरित हुए हैं।

मालती जोशी के लेखन कार्य में उनके पति का सहयोग महत्त्वपूर्ण रहा है। शादी के पश्चात् पति की प्रेरणा से ही उनकी प्रतिभा उभर सकी है। उनके पति ने उन्हें हमेशा प्रोत्साहित किया है। इस बात को स्पष्ट करते हुए वे लिखती हैं - ''उन्होने तो हमेशा प्रोत्साहित किया - हताशा के क्षणों में भी धीरज दिया उन्हें कभी Ego की समस्या नहीं हुई।''[2]

इस प्रकार उनके लेखन संस्कार में उनके पिताजी के साथ उनके पति का स्थान भी महत्त्वपूर्ण रहा है।

1.1.10 नौकरी

मालती जोशी ने शादी से पहले सिर्फ सालभर एक स्कूल में पढ़ाया था, लेकिन शादी के बाद अपने इंजीनियर पति के साथ गांधीनगर बांध पर चली गई। एम्. ए. तक पढ़ी-लिखी होने पर भी नौकरी करने की अपेक्षा आपने घर में अत्यंत वृद्ध सास की सुश्रुषा करना ही योग्य समझा। बाद में आपके अपने बच्चे भी हो गए, और उनकी अच्छी परवरिश में आप इतनी व्यस्त हो गई कि नौकरी का खयाल ही आपके मन में नहीं आया।

नौकरी के बारे में अपने विचार प्रकट करती हुई लिखती हैं, ''यह जरुरी तो नहीं की हर शिक्षित महिला नौकरी करें। मेरा तो आज भी मत है कि अगर बहुत जरुरी न हो तो महिलाओं को नौकरी नहीं करनी चाहिए घर और बच्चें Neglect होते हैं। जिनके घर में सास या मां होती है उनका ठीक है पर ऐसे घर कितने होते हैं ?''[3]

1.2 व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू

1.2.1 कर्तव्यनिष्ठ नारी एवं लेखिका

मालती जोशी एक कर्तव्यनिष्ठ एवं कर्तव्यतत्पर गृहिणी है। अपना उत्तरदायित्व चाहे वह पारिवारिक हो या सामाजिक आपके लिए वह सर्वोपरी होता है। आपकी कर्तव्यशीलता का एक उदाहरण यहां प्रस्तुत किया जा सकता है। सन् 1989 में मुंबई में आयोजित 'जागतिक मराठी परिषद' में मालती जोशी एक 'निबंध पाठक' के रूप में सादर आमंत्रित थी, किंतु उसके कुछ दिन पहले उनकी छोटी गर्भवती बहू स्कूटर-दुर्घटना में घायल होने से उसकी सुश्रुषा की वजह उक्त परिषद में सम्मिलित होने का मोह उन्होने टाल दिया। यह मोह इसलिए टाल दिया गया क्योंकि यहां उन्हें सास की जगह माँ की भूमिका निभाना जरुरी था।

इसके साथ ही मालती एक आदर्श गृहिणी, आदर्श पत्नी, ममतामयी मां, श्रद्धामयी सास, वात्सल्यमयी दादी और मध्यमवर्गीय परिवार की संवेदनशील लेखिका भी है।

1.2.2 अभिरुचिप्रिय नारी एवं लेखिका

मालती जोशी को संगीत बहुत पसंद है। संगीत मालती का मैट्रिक में एक विषय भी रहा है। संगीत की दिशा में उनका सही गुरु रेडियो ही रहा है। संगीत में रुचि होने के कारण पीहर और ससुराल में संगीत को उन्होने अपना प्राण कहा है। पार्श्वसंगीत की तरह दिन भर आपका रेडियो बजता रहता है। दूरदर्शन के इस युग में जहां रेडियो पुरातत्व की चीज हो गई है आपका रेडियो सही सलामत एक अभिन्न साथी की तरह आपके साथ है। मालती जोशी को संगीत सिर्फ पसंद ही नहीं है, तो संगीत के विभिन्न सूर एवं रागों तथा ताल की सही पहचान भी वे रखती हैं। इस प्रकार मालती जोशी की संगीत में गहरी पैठ है।

मालती जोशी को गाने में भी रुचि है। वह शादी से पहले कवि-सम्मेलनों में धूम मचाती थी। उन्हें बुनाई में भी रुचि थी पर अब बुनाई करना छोड़ दिया है। मालती को खाना बनाने और खिलाने का बेहद शौक है।

1.2.3 शिक्षा प्राप्ति की तीव्र ललसा

मालती जोशी के पिताजी सरकारी नौकरी में होने के कारण उनका तबादला हमेशा होता रहता था। इस निरंतर स्थानांतर से मालती की पढ़ाई में अनेक बाधाएं आई। बचपन में घर में पढ़ाई की, फिर पांचवी कक्षा से

स्कूल में गई। आठवीं की परीक्षा, प्रायव्हेट रूप में दी। बी. ए. और एम्. ए. की परीक्षा कालेज से दी।

निरंतर स्थानांतर के कारण पढ़ाई में अनेक दिक्कतें आई। छोटी जगहों पर स्कूल और कालेज तब नहीं थे और लड़कियों को और भी मुसीबतें होती थी। पर इन सब मुसीबतों का सामना कर मालती जोशी ने अपनी पढ़ाई पूरी की। इससे उनकी शिक्षा प्राप्ति की तीव्र लालसा दिखाई देती है।

1.2.4 जिम्मेदार नारी एवं लेखिका

आधुनिक युग में पुत्र और पुत्री को समान दृष्टिकोन से देखनेवाली मालती एक आदर्श लेखिका है। आपके दो पुत्र हैं पुत्री न होने का आभाव आपको खटकता रहा है। यह आभाव मालती ने अपनी रचनाओं में चित्रित पुत्रियों के द्वारा तृप्त किया है। जैसे कृतिअपनी 'समर्पण का सुख', 'आजात कन्या' को समर्पित करते हुए लिखती हैं, ''अपनी आजात कन्या को जो अनेक नाम और रूप धरकर मेरी कहानियों में आई है।''[4] मालती का बेटों की अपेक्षा बेटियों के प्रति दृष्टिकोन आस्थाशील है। आपके अनुसार लड़की मां के साये के समान होती है। मां के अंतरंग को अगर कोई समझ सकता है तो वह है बेटी। 'प्रश्नों के भंवर' कहानी में मालती जोशी बेटी के बारे में लिखती है, ''बेटी अच्छी होती है। साये की तरह मां के आस पास घूमती है, उसका सुख दुःख समझती है। लड़के तो बस खाने-पीने से मतलब रखते हैं।''[5] इस प्रकार आपका जिम्मेदार नारी एवं लेखिका का रूप स्पष्ट होता है।

1.2.5 सुधारवादी नारी एवं लेखिका

मालती जोशी के लेखन का दृष्टिकोन सुधारवादी दिखाई देता है। आपने परंपरावादी, रूढ़िवादी गलत धारणाओं का विरोध करते हुए समाज में फैली 'दहेज प्रथा' पर कठोर प्रहार किया है। दहेज के अभाव में अनब्याही तथा अनचाहे विवाह के बंधन में फंसनेवाली अनगिनत युवतियों का चित्रण मालती जोशी ने अपनी कहानियों में किया है। वैवाहिक और पारिवारिक जीवन के प्रति आपकी कुछ धारणाएं हैं। विवाह के बारे में आपका मत है, ''विवाह केवल प्रणय का बंधन नहीं है। इससे आगे बहुत कुछ है। एक-दूसरे को सहारा देने की शर्त है। परस्पर के प्रति विश्वास के साथ जीने की शर्त है।''[6]

उनकी कहानियों में अवकाश प्राप्त महिलाओं का भी चित्रण देखने को मिलता है। किस प्रकार नौकरी छुट जाने पर परिवारजनों के बर्ताव बदलते हैं। इसका चित्रण एक ऐसी ही अवकाश प्राप्त नारी के द्वारा करते हुए लिखती हैं, ''अस्थियों के टूटने का दर्द क्या होता है इसे उन्होंने नए सिरे से महसूस किया। सोचा काश ! वे भी शर्माईन की तरह अनपढ़ और गंवार होती तो वे भी उनकी तरह हिलग-हिलग कर रो लेती।''[7]

1.2.6 संवेदनशील नारी एवं लेखिका

मालती जोशी एक संवेदनशील नारी एवं लेखिका है। उन्होंने अधिकतर लेखन पारिवारिक जीवन पर ही किया है। पारिवारिक समस्याओं से उनका मन आंकुल हो उठता है, परिणाम स्वरूप परिवार में उत्पन्न समस्याएं जब उन्हें विव्हल कर देती है तो अनायास ही उनकी संवेदनाएं साहित्य में कभी कहानी तो कभी लघुउपन्यास या कभी दीर्घ उपन्यास का रूप धारण कर अभिव्यक्त होती है।

मालती जोशी अपनी कहानियों के विषय के बारे में लिखती हैं, "मेरे आसपास जो कुछ घटता है, मन अनजाने ही उसे अपने में समो लेता है। मुझे उसकी शरारत का पता तब चलता है जब वे सभी बातें कहानी बनकर लेखनी में कुलबुला ने लगती है।"[8]

1.2.7 नारी समस्या की पक्षधर

मालती जोशी की अधिकतर कहानियां पारिवारिक जीवन से जुड़ी होने पर भी उसमें विशेषकर नारी को प्रमुख स्थान दिया गया है। उन्होंने नारी की लगभग सभी समस्याओं का चित्रण अपनी कहानियों में किया है। इस प्रकार नारी मनोविज्ञान पर आधारित रचनाएं 'स्त्री दाक्षिण्य', सहानुभूति, करुणा, संवेदना के रूपों को अंकित करती हैं। अपनी रचनाओं में सापेक्षतः मालती जोशी ने पुरुष को हेय, हीन, कायर, नाकाम, दोषी तथा बौना बताते हुए नारी को त्याग, समर्पण, कष्ट, दुःख, घुटन, सहनशीलता तथा वात्सल्य की प्रतिमा के रूप में अंकित किया है। मालती जोशी नारी वर्ग के प्रति अपनी संवेदनशीलता का परिचय देती हुई लिखती हैं, "पुरुष को जानबुझकर मैं कटघरे में खड़ा नहीं करती। पर समाज का ढांचा ही कुछ ऐसा है कि पुरुष शोषक और नारी शोषित यही दृष्य है, फिर भी मैंने किन्ही कहानियों में पुरुष की अच्छी छवि को भी चित्रित किया है।"[9]

इसके साथ ही मालती जोशी ने शिक्षित नारी की अवकाश प्राप्ति के बाद होनेवाली स्थिति का मार्मिक चित्रण करते हुए कहा है कि, "जीवनावकाश पर संध्या छाया उतरने लगती है, और मन कातर हो उठता है। उम्र हाथों से रेत की तरह फिसलती रहती है और अतित का मोह है कि छूटता ही नहीं। अपनी स्मृतियां अपने अनुभव, अपने संकार, अपने सिद्धात और जादा अपने लगने लगते हैं। उन्हें नई पीढ़ी के साथ बांटने की इच्छा हो आती है। पर नई पीढ़ी तो समय की तेज धारा के साथ भाग रही होती है। पीछे मुड़कर देखने का समय उसके पास कहां ? हर पीढ़ी को वह दर्द झेलना पड़ता है। हर बार यह टीस नई होकर जन्म लेती है।"[10]

1.2.8 सच्ची जीवन साथी

मालती जोशी का विवाह सुपरिटेंडेंट इंजीनियर 'सोमनाथ जोशी' के साथ हुआ था। सोमनाथ जोशी की सहचारिणी के रूप में आपने 42 वर्ष का सुखी दाम्पत्य जीवन व्यतित किया है। मालती जोशी ने नौकरी करने

की अपेक्षा अपनी बुढ़ी सास और बच्चों की सुश्रुषा को अधिक महत्त्व दिया। वे एक मध्यमवर्गीय लड़की की तरह पली-बढ़ी और ब्याही गई। फिर भी उन्होने पति के सहयोग से घर की जिम्मेदारी के साथ अपनी लेखन की कला को भी बरकरार रखा है। उन्होंने जो कहानियां लिखी हैं वे उनके जीवन से जुड़े अनुभवों के आधार पर आधारित है। इसे स्पष्ट करते हुए वे लिखती हैं, ''जीवन की छोटी-छोटी अनुभूतियों को स्मरणीय क्षणों को मैं अपनी कहानियों में पिरोती रही हूं, ये अनुभूतियां कभी मेरी अपनी होती हैं कभी मेरे अपनों की।''[11]

1.3 कृतित्व की पहचान

1.3.1 साहित्य का सृजनारंभ

समकालीन युग की महिला लेखिका 'मालती जोशी' ने अपने लेखन की शुरुआत गीतों से की है। घर का वातावरण और पैतृक संस्कार से वे साहित्य-लेखन के क्षेत्र में आयी हैं। प्रारंभ में वे गीत-लेखन में रुचि रखती थी। गीत लिखने का आपका उत्साह विद्यार्थी जीवन तक ही सीमित रहा फिर उन्होने बच्चों के लिए कहानियां लिखी, कुछ ललित निबंध भी लिखे प्रारंभ में उनकी कई कहानियां लौटाई गई, पर वे निराश नहीं हुई। उन्होने अपना लेखन जारी रखा। फिर सन् 1969 में उनको एक बालकथा प्रतियोगीता में पुरस्कार मिला। तब से 2-3 वर्षों तक उन्होने बच्चों के लिए खूब लिखा और उसे पसंद भी किया गया। उनकी पहली कहानी सन् 1979 के 'धर्मयुग' पत्रिका में छपी थी। इसके बाद कहानी लिखने का जो दौर चला वह आज तक जारी है।

मालती जोशी ने गीत, एकांकी, रेखाचित्र, निबंध, रेडिओ, एवं दूरदर्शन आलेख आदि विधाओं में लेखन किया पर उन्हें विशेष सफलता कहानी-साहित्य में ही मिली है।

मालती जोशी की अधिकतर कहानियां भारतीय पारिवारिक जीवन पर ही आधारित हैं। उनके कहानियों के विषय घर-आंगन तथा पास-पडोस में घटनेवाली अनेक घटना समस्याओं पर आधारित दिखाई देते हैं। जिससे कहानी पढ़ते वक्त पाठक के मन में अपनेपन का एहसास होता है। कहानी के पात्र पाठक के आत्मीय बन जाते हैं। इस तरह अपनेपन की सुरभी से गंधित मालती जोशी के कथा साहित्य में पाठकों का अपना प्रतिबिंब आवश्य दिखाई देता है।

मालती जोशी एक ऐसी कथाकार हैं जिन्होने पूरी सच्चाई और ईमानदारी के साथ जीवन की यथार्थ तस्वीर अपनी कहानियों के द्वारा प्रस्तुत की है। इसी कारण मालती जोशी का नाम 'नारी जीवन की पक्षधर एवं एक संवेदनशील लेखिका' के रूप में जाना-माना जाता है। उनकी कहानियों की जादातर नायिकाएं पढ़ी-लिखी, नौकरी कर अपना घर संभालनेवाली ही पाई जाती हैं। घर में बड़ी बेटी नौकरी कर सारे घर की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेती है पर घरवालें उसकी भावनाओं की कभी चिंता नहीं करते इस समस्या को स्पष्ट करते हुए मालती जोशी कहती है, ''वर्तमान युग में अर्थतंत्र भी नारी की गर्दन पर सवार हो गया है। अब वह

केवल भोग्या या बच्चें जनने की मशीन ही नहीं रह गई है, बल्कि रूपया कमाने का यंत्र भी बन गई है। उसकी अर्जन क्षमता को जी भरकर निचाड़ा जा रहा है। अभिभावक चाहे पिता हो, चाहे भाई या पति।''[12]

इस प्रकार मालती जोशी उपन्यास लेखन की अपेक्षा कहानी लेखन में अधिक रमी है। इस बात को स्पष्ट करते हुए वे लिखती हैं, ''चूंकी उपन्यास का कैन्हवास अधिक विस्तृत होता है, अतः सभी पात्रों को वांछित न्याय नहीं मिल पाता। फिर कृति की लंबाई तय करके नहीं लिखा जा सकता उससे प्रभाव कायम नहीं रह पाता वास्तव में विषय की मांप पर ही कथा की लंबाई निर्भर करती है।''[13]

1.3.2 मालती जोशी का रचना संसार

कहानीकार के रूप में ख्याति प्राप्त करनेवाली मालती जोशी ने अन्य विधाओं को भी समृद्ध किया है। उनका रचना संसार निम्नलिखित तालिका के आधार पर प्रकाशित करने का हमारा प्रयास है

1.3.2.1 कहानी-साहित्य

	रचना	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1.	पाषाण युग	पराग प्रकाशन, दिल्ली	सन् 1976
2.	मध्यांतर	पराग प्रकाशन, दिल्ली	सन् 1977
3.	पराजय	पराग प्रकाशन, दिल्ली	सन् 1979
4.	मन ना भये दस बीस	सरस्वती विहार, दिल्ली	सन् 1981
5.	मालती जोशी की कहानियां	किताबघर, दरियागंज, दिल्ली	सन् 1983
6.	एक घर सपनों का	पराग प्रकाशन, दिल्ली	सन् 1985
7.	विश्वास गाथा	पराग प्रकाशन, दिल्ली	सन् 1985
8.	बोल री कठपुतली	किताबघर दरियागंज, दिल्ली	सन् 1985
9.	आखरी शर्त	राजेश प्रकाशन, दिल्ली	सन् 1991
10.	मोरी रंग दी चुनरियां	किताबघर दरियागंज, दिल्ली	सन् 1992
11.	अंतिम संक्षेप	किताबघर दरियागंज, दिल्ली	सन् 1994
12.	एक सार्थक दिन	साक्षी प्रकाशन, दिल्ली	सन् 1995
13.	महकते रिश्ते	साक्षी प्रकाशन, दिल्ली	सन् 1995
14.	शापित शैशव	किताबघर दरियागंज, दिल्ली	सन् 1996
15.	पिया पीर न जानी	किताबघर दरियागंज, दिल्ली	सन् 1999
16.	बाबूल का घर	साक्षी प्रकाशन, दिल्ली	सन् 1999

17.	प्रेस में	साक्षी प्रकाशन, दिल्ली	सन् 1999
18.	और एक रात है	किताबघर दरियागंज, दिल्ली	सन् 2001
19.	अपने अपने आंगन की छांव	साक्षी प्रकाशन, दिल्ली	सन् 2003

1.3.2.2 उपन्यास साहित्य

	रचना	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1.	पटाक्षेप	पराग प्रकाशन, दिल्ली	सन् 1977
2.	समर्पण का सुख	पराग प्रकाशन, दिल्ली	सन् 1978
3.	सहचारिणी	सरस्वती विहार, दिल्ली	सन् 1979
4.	राग-विराग	सरस्वती विहार, दिल्ली	सन् 1985
5.	शोभायात्रा	सरस्वती विहार, दिल्ली	सन् 1985

1.3.2.3 बाल-साहित्य

	रचना	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1.	दादी की घड़ी	पराग प्रकाशन, दिल्ली	सन् 1977
2.	जीने की राह	पराग प्रकाशन, दिल्ली	सन् 1978
3.	परिक्षा और पुरस्कार	राजेश प्रकाशन, दिल्ली	सन् 1994
4.	स्नेह के स्वर	राजेश प्रकाशन, दिल्ली	सन् 1994
5.	सच्चा सिंगार	राजेश प्रकाशन, दिल्ली	सन् 1994

1.3.2.4 अन्य साहित्य

	रचना	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1.	हार्ले स्ट्रीट (व्यंग्य)	राजेश प्रकाशन, दिल्ली	सन् 1995
2.	मेरा छोटा सा अपनापन (गीत संग्रह)	पड़ाव प्रकाशन, भोपाल	सन् 1999
3.	पाषाण (मराठी कथा संग्रह)	पड़ाव प्रकाशन, भोपाल	सन् 1980
4.	परिपूर्ति (मराठी कथा संग्रह)	पड़ाव प्रकाशन, भोपाल	सन् 1989

1.3.2.5 अनुवाद

मालती जोशी की कहानियों का अंग्रेजी, रशियन, जापानी आदि विदेशी तथा कन्नड, मलयालम,

तामिल, गुजराती, उर्दू आदि भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है। मालती जोशी ने स्वयं अपनी 2-3 दर्जन कहानियों का मराठी में अनुवाद किया है।

इस प्रकार अनुवाद के क्षेत्र में मालती जोशी का महत्वपूर्ण स्थान है।

1.3.2.6 रेडियो

मालती जोशी की करीब दो दर्जन कहानियों के 'रेडियो नाट्य रूपांतर' तथा कहानियों का रेडियो वाचन हुआ है।

1.3.2.7 टेलीविजन

मालती जोशी की कई कहानियों के नाट्य रूपांतर दूरदर्शन पर प्रस्तुत किए गए हैं। 'जया बच्चन' ने आपकी सात कहानियों पर 'सात फेरे' नामक सिरियल बनाया है। 'गुलजार' द्वारा निर्देशित सिरियल 'किरदार' में आपकी दो कहानियों का समावेश किया गया है। 'भावना' सिरियल में आपकी तीन कहानियों का प्रस्तुतिकरण हुआ है। आपके सुपुत्र 'सच्चिदानंद' के द्वारा 'राग-विराग' उपन्यास पर धारावाहिक का निर्माण हुआ है।

1.3.2.8 सम्मान एवं पुरस्कार

1. अहिंदी भाषी कथा लेखिका के रूप में 'शिवसेवक तिवारी पदक'।
2. रचना पुरस्कार कलकत्ता सन् 1983।
3. मराठी कथा-संग्रह 'पाषाण' के लिये महाराष्ट्र शासन का पुरस्कार सन् 1984।
4. अक्षर आदित्य सम्मान।
5. कला मंदिर सम्मान।
6. मधुवन गुरूवंदना सम्मान।
7. महिला वर्ष में 'स्टेट बैंक ऑफ इंदौर' सम्मान।
8. मध्यप्रदेश के राज्यपाल द्वारा अहिंदी भाषी लेखिका के रूप में सम्मान सन् 1985।
9. मध्यप्रदेश, 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' के भावभूति अलंकरण से वर्ष 1998 में विभूषित।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा लेखिकाओं में मालती जोशी का नाम जाना-माना है। मालती जोशी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुव्यापक है। उनके व्यक्तित्व के निर्माण में उनके

माता-पिता का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। उन्हें लेखन की प्रेरणा उनके पिताजी से मिली जिसके कारण आज वे साहित्य के क्षेत्र में अपना एक अलग स्थान निर्माण कर चुकी है।

मालती जोशी ने अनेक विधाओं में लेखन किया पर वे अधिक जानी जाती है कहानीकार के रूप में ही। साहित्यकार के रूप में उन्हें अनेक सम्मान एवं पुरस्कार मिले हैं। उनका साहित्य अनेक भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनूदित हुआ है। उनकी कई कहानियां रेडियो, दूरदर्शन और रंगमंच से प्रसारित भी हुई हैं। यही उनकी लोकप्रियता का प्रमाण है। उनकी भाषा सीधी एवं सरल होने के कारण, उनकी कहानियां पाठक के अंतर्मन को छुती हैं।

मालती जोशी की कहानियों में पारिवारिक जीवन के विभिन्न पहलुओं के दर्शन होते हैं। उनकी कहानियों का प्रमुख स्वर अभिशप्त नारी जीवन को अंकित करना और उसकी मूक वेदना को मुखर करना ही रहा है।

इसप्रकार उनके जीवन के समग्र पहलुओं का मूल्यांकन करनेपर दृष्टिगोचर होता है कि वे एक मध्यवर्गीय मराठी भाषी परिवार से जुड़ी संवेदनशील कहानीकार है। उन्होंने अपनी पारिवारिक कहानियों के माध्यम से नारी समस्याओं को प्रस्तुत किया है। आपने कहानी, उपन्यास, गीत, एकांकी, रेखाचित्र, निबंध, रेडियो, दूरदर्शन आलेख, व्यंग्य, बालकथा आदि विधाओं को समृद्ध किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से यथार्थ जीवन की अभिव्यक्ति की है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मालती जोशी का पत्र - परिशिष्ट, पृ. 162
2. मालती जोशी का पत्र - परिशिष्ट, पृ. 162
3. मालती जोशी का पत्र - परिशिष्ट, पृ. 162
4. समर्पण का सुख - अवरन पृष्ठ
5. मालती जोशी - बोल री कठपुतली, पृ. 15
6. स्मारिका - 1995, पृ. 44
7. मालती जोशी - अंतिम संक्षेप, पृ. 50
8. आखरी शर्त - अवरन पृष्ठ
9. स्मारिका - 1995, पृ. 42
10. अंतिम संक्षेप - अवरन पृष्ठ
11. एक सार्थक दिन - अवरन पृष्ठ
12. मोरी रंग दी चुनरियां - अवरन पृष्ठ
13. स्मारिका - 1995, पृ. 47-48